अध्याय द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय – द्वितीय

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

2. प्रस्तावना :–

साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक अनुसंधान की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण कदम है चाहे वो किसी भी क्षेत्र का हो। शोध कार्य के अंतर्गत साहित्य का पुनरावलोकन एक प्रारंभिक अनिवार्य प्रक्रिया है क्योंकि यह व्याख्या की जाने वाली समस्या की पूरी तस्वीर प्रकट करता है। सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सम्बन्धित साहित्य उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोषों पत्र–पत्रिकाओं प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबधों एवं अभिलेखों आदि से है जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के बिना अनुसंधानकर्ता का कार्य अंधेरे में तीर चलाने के समान होगा। इसके अभाव में उचित दिशा में अनुसंधान को नहीं बढ़ाया जा सकता। जब तक उसे ज्ञान न हो कि इस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है किस विधि से कार्य किया गया है तब तक वह न तो समस्या का निर्धारण कर सकता है और न ही इस दिशा में सुल हो सकता है।

2.1 साहित्य के पुनरावलोकन से लाभ :–

1. जो अनुसंधान कार्य पहले अन्य अनुसंधानकर्ता द्वारा किया जा चुका है, वह पुनः किया जा सकता है।
2. ज्ञान के क्षेत्र के विस्तार के लिए आवश्यक है कि अनुसंधानकर्ता को यह ज्ञान हो कि ज्ञान की वर्तमान सीमा कहा पर है। वर्तमान ज्ञान की जानकारी के पश्चात ही ज्ञान आगे बढ़ाया जा सकता है।

3. पूर्व साहित्य के पुनरावलोकन से अनुसंधानकर्ता को अपने अनुसंधान के विधान की रचना के संबंध में अन्तदृष्टि प्राप्त हो सकती है।

4. पूर्व अनुसंधानों के अध्ययन से अन्य सम्बन्धित नवीन समस्याओं का पता चलता है।

2.2 शोध से सम्बन्धित कार्य :-

विकलांगता पर किये गये शोध अध्ययन :-

1. **मण्डाल,बी.बी.** सामाजिक अनुसन्धान तथा व्यवहारिक मानव -विज्ञान कलकत्ता से शारीरिक विकलांग संस्थान विहार में अध्ययन किया गया।

यह एक शारीरिक विकलांग छात्रों को भारत सरकार द्वारा दिये जाने वाली शिष्यवृत्ती योजना का मूल्यांकन किया गया । जो विहार के लिए दिया गया था।

1971-74 वर्ष के दौरान इस योजना से लाभान्वित होने वाले वयक्तियों से साक्षात्कार लिया गया, जिसमें 48 अंध लाभार्थी थें,3 बधीर शारीरिक दृष्ट्या अपाहिज थें।

शोध के मुख्य निष्कर्ष

1. यह मान्यता पायी गई है की बाल अवस्था में विकलांगता के कारण विद्यालय में प्रवेश मिलने के लिए ज्यादा समय होता है। यह सही नही था, 2/3 छात्रों ने स्कूल में जाना छः वर्ष के दौरान सुरू कर दिया था।
2. यह पाया गया की शालेय अवस्था के दौरान विकलांगता शालेय प्रगति में बाधक है। इसके बारे में 1/3 छात्रों की जबाबदारी आती है।
3. विद्यार्थियों को देखकर लगा की समन्वित स्कूल अच्छे होने है।
4. उनको दी जाने वाले शिष्यवृत्ती मद्दगार साबित हुई।

2. सिंह, आर.पी., और प्रभा एस.

बिहार के विद्यालयों में अध्ययनरत शारीरिक विकलांग विद्यार्थियों के लिए प्रदान समावेशित शिक्षा सुविधाओं का मूल्यांकनात्मक अध्ययन, शिक्षा विभाग, पटना वि. 1987.

अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य–

1. सुविधाओं की उपलब्धता एवं अनुदानित सुविधाओं की उपलब्धता में विद्यमान अंतर का मूल्यांकन करन।
2. शारीरिक विकलांग विद्यार्थियों को एकीकरण के विस्तार में होनेवाली कठिनाईयों का अध्ययन करना।
3. शारीरिक विकलांग तथा अन्य विद्यार्थियों के सामंजस्य स्तर की तुलना करना।
4. शारीरिक विकलांग विद्यार्थियों की प्रवेश प्रक्रिया की जॉच करना।
5. शारीरिक विकलांग विद्यार्थियों के लिए प्रस्तावित कार्यक्रम के परीक्षण एवं प्रशासन का मूल्यांकन करना।

शोध का प्रमुख निष्कर्ष :

1. शासन द्वारा अनुदानित सुविधाएँ विद्यालयों द्वारा उपलब्ध नहीं कराई गई।
2. विद्यालयों में उपलब्ध सुविधाओं के प्रति विद्यार्थी उत्साहित नहीं पाये गये एवं उद्देश्य प्राप्ति हेतु प्रदान स्त्रोतों की केवल 33% उपयोगीता ही प्राप्त हुई।
3. शारीरिक विकलांग विद्यार्थियों का अपने परिवारों से उत्तम सामंजस्य प्राप्त हुआ किन्तु शारीरिक विकलांग विद्यार्थियों एवं अन्य विद्यार्थियों में

संचार की कमी पाई गई। साथ ही शिक्षक के द्वारा इस अंतराल को कम करने हेतु किए गये प्रयासों में भी कमी प्राप्त हुई।

4. प्रवेश प्रक्रिया अनाकर्षक (Defective) प्राप्त हुई।d

3. कौर दीपिका 1991

दो विघालयों की बौद्धिक उपलब्धि पर चिंता परिक्षण एवं पुनर्बलन और बुद्धि की सीमितता के प्रभाव का अध्ययन 1991पि.एच.डी. पंजाब

उददेश्य,

विघालयों में चिंता परीक्षण एवं पुनर्बलन और बुद्धि सीमितता के विभेद एवं आकर्षक प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन से प्राप्त प्रमुख निष्कर्षः

1. आवासीय विद्यालय के लिए, बालक एवं बालिकाओं के उपलब्धि परिणामों में अंतर पाया गया।
2. समस्त समूहों के लिए, चिंता परीक्षणों एवं विभिन्न विद्यालयों, विषयों के मध्य संबंध प्राप्त हुआ।
3. प्रत्येक समूह के लिए विभिन्न विद्यालयीन विषयों में सार्थक अन्तर नहीं प्राप्त हुआ।
4. चिंता परिक्षण, पुनर्बलन और बुद्धि की सीमितता में उपलब्धि के साथ सार्थक सम्बन्ध प्राप्त हुआ। तथा आवासीय विघालयों के प्रतिदर्श हेतु 7% से 32% तथा शासकीय विघालयें के प्रतिदर्श हेतु 9% से 30% उपलब्धि में विचलन प्राप्त हुआ।

4. गंबर (1957) –

के अध्ययन से तीन पक्ष सामने आये। एक ''बौद्धिक कार्य के सामान्य कारक'' और एक ''अशाब्दिक सृजनात्मकता के समूह कारक'' जिनसे प्रदर्शित हुआ कि सृजनात्मकता और बौद्धिक क्षमता दोनों एक ही बौद्धिक कार्य के दो पृथक किये जा सकने वाले प्रभार है, और साथ ही ये दोनों एक दुसरे से पूर्णतः निराश्रीत नहीं है।

5. डॉ. माथुर (1972) –

ने ''स्कूल अचीवमेन्ट एण्ड इंटेलीजेंस इन रिलेशन टू सम इकोनोमिक बैकग्राउण्ड फैक्टर्स''

शीर्षक के अंतर्गत शोधकार्य किया। डॉ. माथुर ने अमृतसर के एक उच्चतर 100 विद्यार्थियों को न्यादर्श के लिये चयनित किया। न्यादर्श के अंतर्गत चयनित छात्र विभिन्न व्यवसायिक पारिवारिक स्तर के लिये गये। इन छात्रों के अभिभावक कृषक, व्यवसायी सरकारी कर्मचारी, दुकानदार तथा भिन्न कार्य करने वाले थे। उन्होंने एक शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण तथा सामाजिक आर्थिक स्तर के परीक्षण प्रश्नावली तैयार की, उन्होंने हण्डल बुद्धि परीक्षण पंजाबी का परीक्षण किया।

उन्होंने निष्कर्ष पाया कि बुद्धि उपलब्धि तथा पारीवारिक स्थिति कारक के बीच घनिष्ठ संबंध है।

1. उसके अनुसार अभिभावकों की शिक्षा तथा छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के बीच उच्च धनात्मक सहसम्बन्ध है।
2. उन्होंने पाया कि अच्छे परिवार के बच्चों की बुद्धि क्षमता अच्छी रही।

6. सिंह (1982) –

ने ''हाईस्कूल के छात्रों की सृजनात्मकता के मापन का अध्ययन बुद्धिमत्ता एवं सामाजिक आर्थिक स्तर के सन्दर्भ में किया। इसके 400 शहरी एवं 400 ग्रामीण छात्रों को लिया गया। प्रदत्तों में एकीकरण के लिए जोशी द्वारा निर्मित प्रदत्तों मानसिक योग्यता परीक्षण एवं बाकर मेंहदी के सृजनात्मक परीक्षण को लिया गया।

7. रैना (1984) –

ने ''13 वर्ष से 18 वर्ष के विद्यालयीन छात्रों में बुद्धि के सापेक्ष सृजनात्मकता का विकास'' का अध्ययन किया और यह निष्कर्ष निकाला

1. राष्ट्रीय प्रतिमा वाले चयनित व अचयनित समूह के छात्रों की मौखिक सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर है। परन्तु दृश्य सृजनात्मकता में कोई अन्तर नहीं होना।
2. सामान्य बुद्धिमत्ता के अंको का मौखिक व दृश्य सृजनात्मकता के परीक्षण से कोई सम्बन्ध नहीं है।

8. नंदम पवार बी.एस. 1986 –

ने बच्चों में भाषिक सृजनात्मकता के विकास का अध्ययन पी.एच. डी. हेतु नागपूर विश्वविद्यालय में किया और यह निष्कर्ष निकाला है कि प्रायोगिक पद्धति से पढ़ाए गये छात्रों में दुसरे समूह से अच्छा प्रदर्शन रहा उनमें भाषिक कुशलता न्यादा पायी गई।

9. एस. संथाना कृष्णन (1988) –

ने सृजनात्कता तथा मूल्यों के बीच संबंध का अध्ययन किया। अध्ययन हेतु सृजनात्मकता के लिए मेंहदी परीक्षणं तथा स्वयं निर्मित मूल्य स्केल का उपयोग किया। अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि सामाजिक मूल्य तथा

सृजनात्मकता में सकारात्मक व सार्थक संबंध होना है। सौन्दर्यात्मक मूल्य तथा सृजनात्मकता में सकारात्मक व सार्थक संबंध होना है। सैद्धांतिक मूल्य व सृजनात्मकता मे नकारात्मक संबंध होना है। राजनैतिक मूल्य तथा सृजनात्मकता में सकारात्मक संबंध होना है।

10. सिंह रमेश विश्ट (1993) –

ने सृजनात्मकता का लिंगभेद व सस्कृती से संबंध का अध्ययन किया। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि आदिवासी और गैर आदिवासी विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर होता है तथा बालक बालिकाओं से अधिक सृजनशील होते है।

11. सिंह विजेन्दर (1994) –

ने प्रवाह व विविधता के विकास में आयु व उपलब्धि का अध्ययन किया। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उपलब्धि का सृजनात्कता पर प्रभाव नहीं पडता है।

12. मेनन पाण्डेय (1995) –

ने "आदिवासी, औद्यागिक तथा शहरी क्षेत्र के विधार्थियों की वैज्ञानिक सृजनात्मकता तथा मूल्य वरीयत्ता" का एम. एड. हेतु बरकतउल्लह विश्वविघालय में अध्ययन किया और यह निष्कर्ष निकालाः–

1. अदिवासी औधौगिक एवं शहरी क्षेत्र के विघार्थीयो की वैज्ञानिक सृजनात्मकता में अन्तर नही होगा ।
2. औद्योगिक क्षेत्र के विद्यार्थियों में सामाजिक और आर्थिक मूल्य का विकास अन्य क्षेत्रो की तुलना में सार्थक रूप से अधिक होता है।
3. लिग भेद के आधार पर विद्यार्थियों की वैज्ञानिक सृजनात्मक में अन्तर नही पाया गया।

13. हेडोन और लेटोन (1968)

ने सृजनात्मकता के बारे में कहा कि विद्यालय की परिस्थितियों बच्चों की सृजनात्मक प्रवृत्ती पर बहुत प्रभाव डालती है। उन्होने विद्यालय की परिस्थिती तथा सृजनात्मक प्रवृत्ती का अध्ययन किया है।

14. पारसनेस और सहयोगी

उन्होने सृजनशीलता के प्रशिक्षण समंन्धीत एक अध्ययन किया। उनके अध्ययनेा के द्वारा यह तथ्य सामने आया की सृजनशीलता मुख्य प्रयासेा के द्वारा अधिक विकसित होती हैं।